International Journal of Science and Social Science Research [IJSSSR] ISSN: 2583-7877

चित्रकूट में पर्यटन विकास : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

Ajita Dixit[1]; Dr.Anita Nigam[2]

[1]MSc. Student, Department of Geography, D.B.S College Kanpur, India

[2]Assistant Professor, Department of Geography, D.B.S College Kanpur, India

Corresponding Author Email: anitanigam1975@gmail.com

सारांश— चित्रकूट भारत का एक प्राचीन धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थल है, जिसका उल्लेख रामायण सहित अनेक ग्रंथों में मिलता है। मंदाकिनी नदी, कामदगिरि पर्वत, हनुमान धारा, गुप्त गोदावरी और अन्य पवित्र स्थलों के कारण यह क्षेत्र धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र है। वर्तमान में यहाँ तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, किन्तु अपर्याप्त अवसंरचना, परिवहन की सीमाएँ, स्वच्छता व कचरा प्रबंधन की समस्या, पर्यावरणीय दबाव और प्रचार-प्रसार की कमी जैसी चुनौतियाँ इसके सतत विकास में बाधक हैं।

इस शोधपत्र का उद्देश्य चित्रकूट पर्यटन की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करना, प्रमुख चुनौतियों को रेखांकित करना तथा भविष्य की संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करना है। अध्ययन में पाया गया कि धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ इको-टूरिज्म, सांस्कृतिक पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन के विकास की व्यापक संभावनाएँ हैं। यदि सरकार, स्थानीय समुदाय और निजी क्षेत्र मिलकर योजनाबद्ध रणनीति अपनाएँ तो चित्रकूट न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र रहेगा बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा।

मुख्य शब्द Keywords: चित्रकूट, पर्यटन, पर्यटक, धार्मिक स्थल, पर्यावरणीय समस्याएं

I. परिचय

भारत प्राचीनकाल से ही अपनी सांस्कृतिक विविधता, ऐतिहासिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध रहा है। भारतीय पर्यटन उद्योग न केवल देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान करता है, बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षेत्रीय विकास का भी आधार बनता है। इसी परिप्रेक्ष्य में चित्रकूट एक प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल के रूप में विशेष महत्व रखता है।

चित्रकूट को भगवान श्रीराम की तपोभूमि और 'आस्था की नगरी' कहा जाता है। मंदाकिनी नदी, कामदगिरि, स्फटिक शिला, गुप्त गोदावरी, भरत मिलाप मंदिर और हनुमान धारा जैसे धार्मिक स्थल हर वर्ष लाखों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की प्राकृतिक छटा, जंगल, झरने और आश्रम इसे धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ पारिस्थितिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाते हैं। हालाँकि, अपनी महत्ता के बावजूद चित्रकूट में पर्यटन विकास कई चुनौतियों से जूझ रहा है। अपर्याप्त आधारभूत संरचना, पर्यावरणीय दबाव तथा योजनाबद्ध रणनीति का अभाव इसके सतत विकास में अवरोध उत्पन्न करते हैं। वहीं दूसरी ओर, धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ इको-टूरिज्म, ग्रामीण पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन की विकास की अपार संभावनाएँ भी विद्यमान हैं।

II. अध्ययन के उद्देश्य

- चित्रकूट क्षेत्र में पर्यटन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
- पर्यटन विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
- पर्यटन क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक योगदान का अध्ययन करना।

- चित्रकूट में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं पारिस्थितिक पर्यटन की संभावनाओं को रेखांकित करना।
- पर्यटन विकास हेतु सतत और संतुलित रणनीतियाँ सुझाना।

III. अध्ययन का महत्त्व

चित्रकूट सिर्फ़ अपने धार्मिक महत्व के कारण ही खास नहीं है, बल्कि यहां के प्राकृतिक वातावरण और अलग-अलग संस्कृतियों के कारण भी खास है। वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को चित्रकूट इसलिए दिलचस्प लगता है क्योंकि यहाँ की भूमि, प्राकृतिक वातावरण और संस्कृति बहुत ही खास तरीके से एक दूसरे से जुड़ी हुई है।

IV. अध्ययन क्षेत्र (Study Area)

उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित चित्रकूट जिला। स्थिति एवं स्थलाकृति- भारत के उत्तरी मध्य क्षेत्र में स्थित चित्रकूट एक प्रसिद्ध धार्मिक और सांस्कृतिक स्थान है। यह मध्य प्रदेश के सतना जिले और उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जिले के कुछ हिस्सों को शामिल करता है। चित्रकूट लगभग 25.1° उत्तरी अक्षांश और 80.9° पूर्वी देशांतर पर है। यह असमान और पहाड़ी है क्योंकि यह विंध्य पर्वत श्रृंखला के निचले हिस्से में है।

IV.I. जलवायु एवं प्राकृतिक संसाधन

चित्रकूट की जलवायु एक मानसूनी उष्णकटिबंधीय है। यहां लगभग 800-1200 मिलीमीटर की औसत वार्षिक वर्षा होती है, जिसमें से अधिकांश जून और सितंबर के महीनों में होता है।

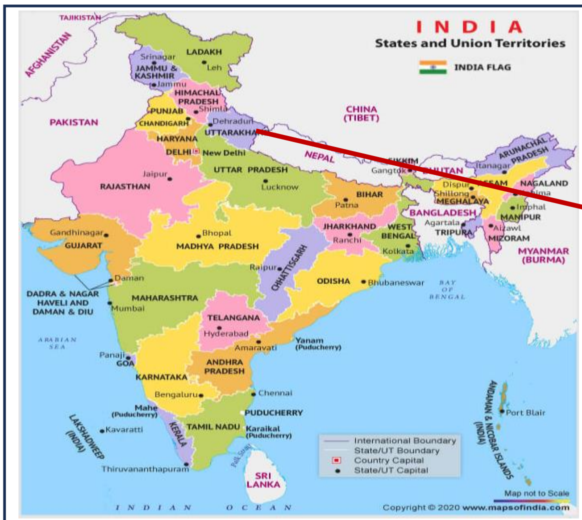

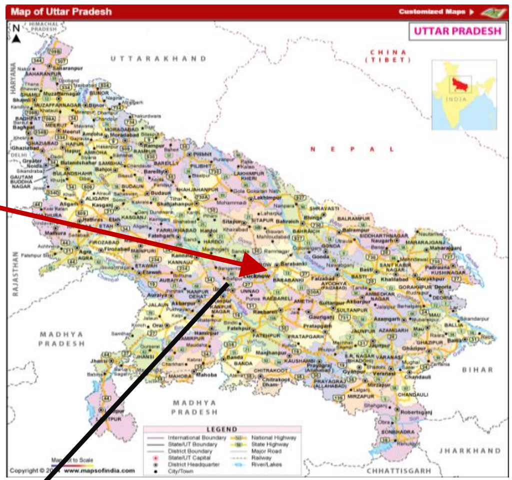

श्रोत – मानचित्र स. 1

मानचित्र स. 2

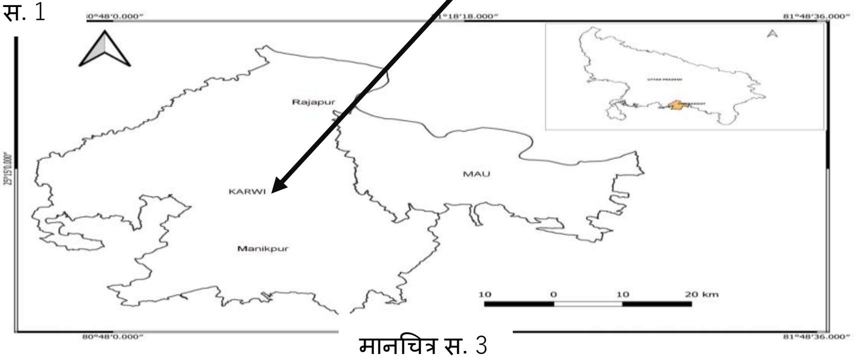

श्रोत- मानचित्र स. 3

- ग्रीष्मकाल: अधिकतम तापमान लगभग 45° C तक पहुँच सकता है।
- शीतकाल: न्यूनतम तापमान लगभग 5° C तक गिर सकता है।
- वर्षा: औसत वार्षिक वर्षा लगभग 80 से 100 सेंटीमीटर के बीच होती है।

IV.II. भू-आकृतिक विशेषताएँ

चित्रकूट एक विविध भू-आकृतिक क्षेत्र है, जिसमें पहाड़ियाँ, पठारी क्षेत्र और नदी की घाटियाँ हैं। यह क्षेत्र विंध्य चट्टानों से बना है, जो भूवैज्ञानिक रूप से प्राचीन और कठोर हैं।

- मंदाकिनी नदी घाटी: यह नदी चित्रकूट में होने वाले सांस्कृतिक और धार्मिक उत्सवों का केंद्र है। रामघाट, जानकी कुंड और सती अनुसूया आश्रम इसी के तट पर हैं।
- गुफाएँ एवं जलप्रपात: स्फटिक शिला और गुप्त गोदावरी जैसे स्थान भूगर्भीय रूप से भी महत्वपूर्ण हैं।

IV.III. भौगोलिक विस्तार

- उत्तर दिशा में: कौशांबी और प्रयागराज
- दक्षिण में: सतना (मध्य प्रदेश)
- पूर्व में: मिर्जापुर
- पश्चिम में: बांदा और पन्ना

यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश से घिरा हुआ है। अध्ययन क्षेत्र के प्रमुख नगरों में चित्रकूटधाम (करवी), गुप्त गोदावरी, सती अनुसूया आश्रम, भरतकूप और रामघाट हैं।

V. साहित्य समीक्षा (Literature Review)

- विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO, 2019, 2023) की रिपोर्ट के अनुसार पर्यटन वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ है और सतत पर्यटन की अवधारणा तेजी से महत्व पा रही है।
- Butler (1980) के "Tourism Area Life Cycle Model" ने पर्यटन विकास के चरणों का विश्लेषण प्रस्तुत किया।
- Mishra (2004) और Singh (2012) ने दर्शाया है कि धार्मिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग (2015–2022) की रिपोर्ट्स में चित्रकूट सहित अयोध्या, वाराणसी और प्रयागराज को धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र बताया गया है।
- Pandey (2010), Verma (2017) और Singh (2020) जैसे शोधकर्ताओं ने चित्रकूट पर्यटन की महत्ता और चुनौतियों को सामने रखा है, किंतु समग्र विश्लेषण अब भी सीमित है।

उपलब्ध साहित्य यह संकेत देता है कि चित्रकूट पर्यटन पर विस्तृत शोध की आवश्यकता है, जिससे चुनौतियों और संभावनाओं का संतुलित मूल्यांकन हो सके।

VI. अनुसंधान कार्यप्रणाली (Research Methodology)

- अनुसंधान का स्वरूप: वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक।
- डेटा संग्रह: प्राथमिक स्रोत, द्वितीयक स्रोत
- नमूना आकार: 150–200 उत्तरदाता (पर्यटक, व्यापारी, स्थानीय निवासी)।
- डेटा विश्लेषण: गुणात्मक और मात्रात्मक, तालिकाएँ, ग्राफ और SWOT Analysis

डेटा विश्लेषण की विधियाँ:

- सांख्यिकीय तालिकाएँ और चार्ट (बार ग्राफ, पाई चार्ट)
- मानचित्रण (थीमेटिक और सांस्कृतिक मानचित्र)
- तुलनात्मक चार्ट (स्थल-वार तीर्थयात्रियों की संख्या का विश्लेषण)

VI.I. प्राथमिक स्रोत

VI.I.I. स्थल निरीक्षण: प्रमुख स्थानों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया, भौगोलिक अवस्थिति, जनसंख्या, पर्यटकों की संख्या आदि को देखते हुए।

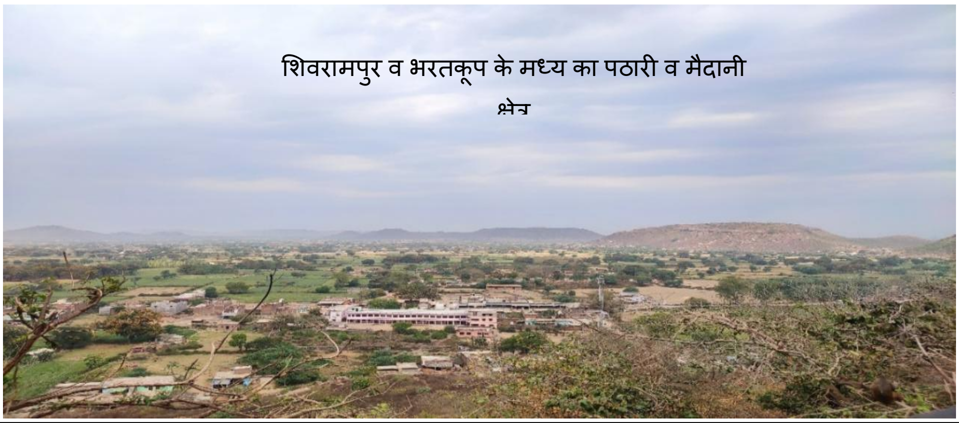

साक्षात्कार: सीधे बातचीत करके क्षेत्रीय विशेषज्ञों, पंडा समुदाय के सदस्यों, मंदिर प्रबंधकों और गाइडों से जानकारी प्राप्त की गई।जिसे चित्र संख्या 2 से 5 तक में दर्शाया गया है।

राजकीय जिला पुस्तकालय प्रभारी डॉ. प्रदीप शुक्ला

सरकारी विद्यालय के कर्मचारी से प्रश्नावली

खोही ग्राम निवासी **चित्र स. 4**

राजकीय औद्योगिकप्रशिक्षण संस्थान(शिवरामपुर) की छात्राएँ

VI.I.II. प्रश्नावली: स्थानीय लोगों, दुकानदारों, तीर्थयात्रियों और प्रशासनिक अधिकारियों से कई प्रश्न पूछे गए, जैसे, "आप चित्रकूट के निवासी है? यहां पर्यावरणीय समस्याएं है ?, किस प्रकार महसूस करते हैं? यहां की संस्कृति पर्यटकों से प्रभावित होती है ?,व मंदाकिनी नदी प्रदूषित है ?

प्रदर्शित ग्राफ स. 1 व पाई चार्ट स. 1 से 6 ऑनलाइन प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किए गए, प्राथमिक डेटा को प्रदर्शित करता है। ग्राफ के द्वारा उत्तरदाताओं की संख्या व उत्तरादाओं की उम्र दिखाई गई है जबकि पाई चार्ट के द्वारा उत्तरदाताओं के जवाबों को प्रतिशत (%) के रूप में दिखाया गया है ताकि प्रत्येक विकल्प की तुलना स्पष्ट रूप से की जा सके।

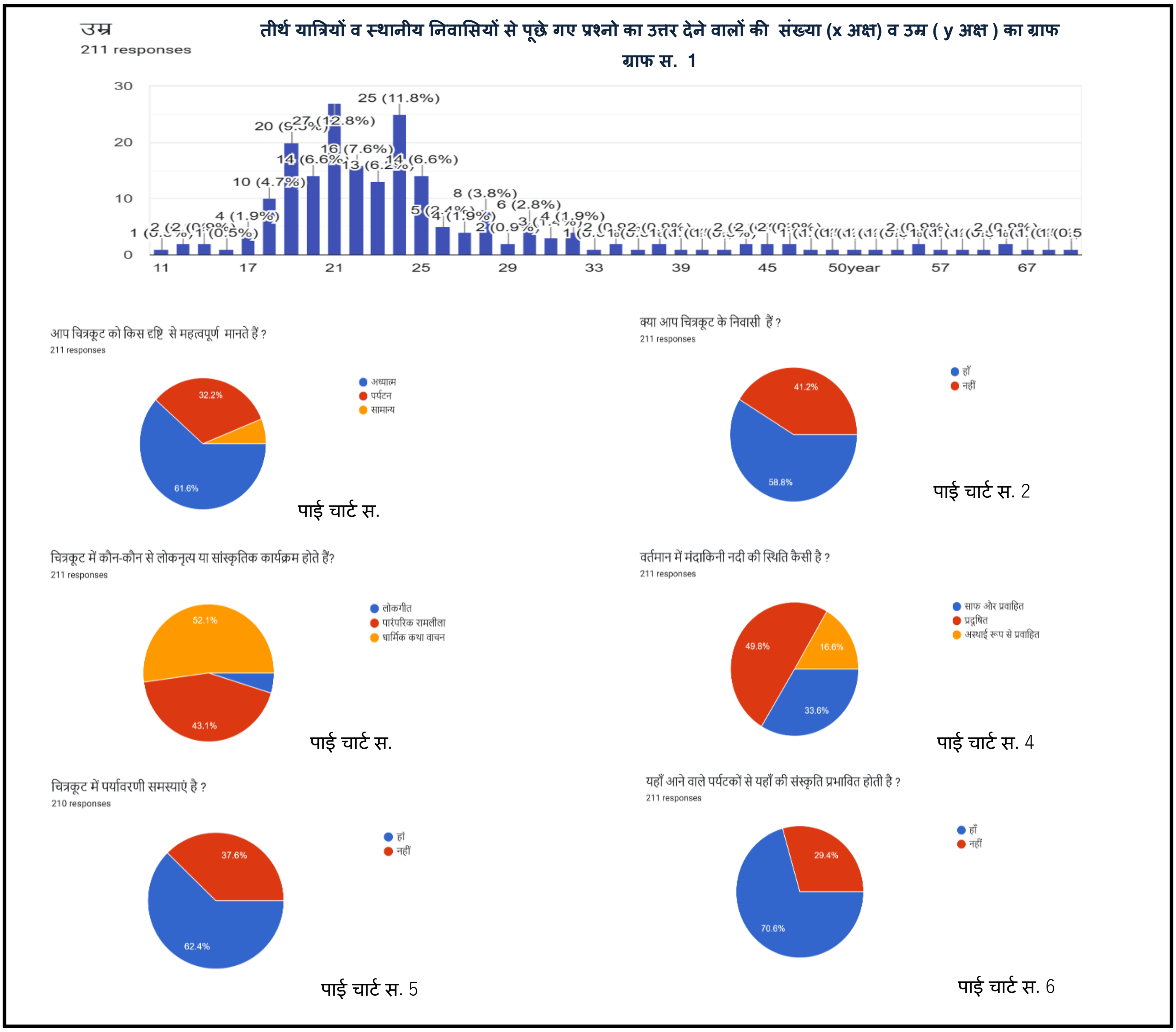

ग्राफ़ स. 1 और पाई चार्ट स.1 से 6 से समझा जा सकता है कि प्रश्नावली में भाग लेने वाले अधिकतर उत्तरदाता 20–30 वर्ष के युवा थे। जिसमें से अधिकांश लोगों का मानना है कि चित्रकूट अध्यात्म दृष्टि से महत्वपूर्ण है , यहां की संस्कृति पर्यटकों से प्रभावित होती है,मंदाकिनी नदी प्रदूषित है और पर्यावरणीय समस्याएं भी है जिसमें सुधार की आवश्यकता है।

VI.I.III. फोटोग्राफी एवं भू-स्थानिक डेटा (GPS/GIS) GPS तकनीक का उपयोग करके स्थानों की तस्वीरें ली गईं और उन्हें मानचित्रित किया गया।

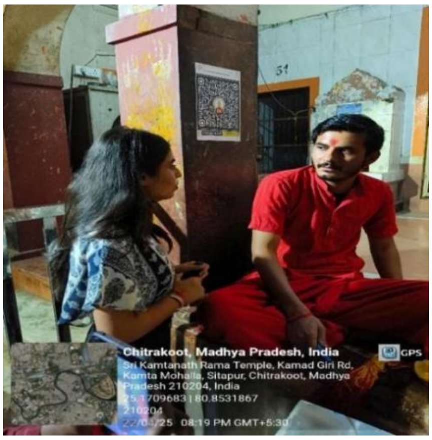

परिक्रमा मार्ग में मंदिर पुजारी
चित्र स. 6

कामदगिरि मंदिर की GPS तकनीकी का प्रयोग कर की गई फोटोग्राफी
चित्र स. 7

VI.II. द्वितीयक स्रोत सरकारी रिपोर्ट्स, पुस्तकें, शोधपत्र, वेबसाइट्स

VI.II.I. धार्मिक स्थल सभी धार्मिक स्थल वहाँ आने वाले आगंतुक चाहे वह तीर्थयात्री हों या पर्यटक, से प्रभावित होते है । प्रभाव आध्यात्मिक हो, आर्थिक या सामाजिक सभी दृष्टि से महत्वपूर्ण है । स्थानीय निवासी, दुकानदार, तीर्थयात्री तथा पर्यटकों के साथ किए गए साक्षात्कार और प्रश्नावली के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम पाई चार्ट स. 7 व सारणी स. 1 के द्वारा दर्शाया गया है । जिसमें पाया गया कि चित्रकूट के प्रमुख तीर्थस्थलो में सर्वाधिक लोकप्रिय कामदगिरि परिक्रमा व रामघाट है। चित्रकूट के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर आगंतुक (%)

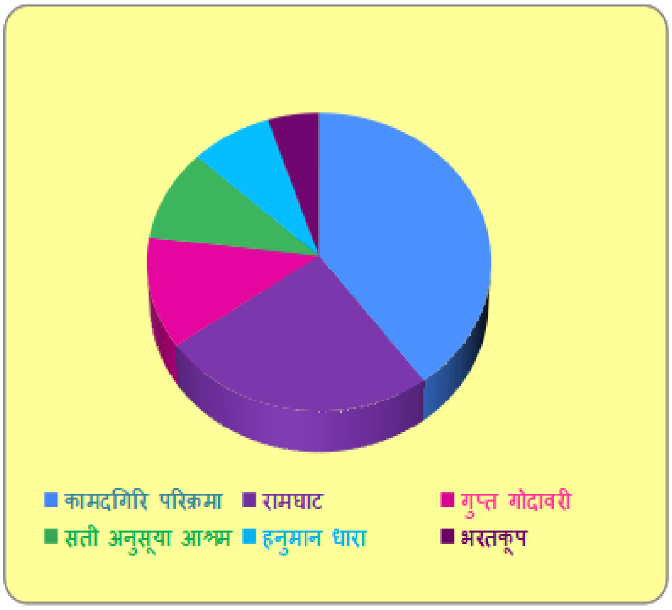

पाई चार्ट स. 7

सारणी सं. 1 चित्रकूट के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर आगंतुक (%)

पर्यावरणीय समस्याओं की तीव्रता (1 से 5 स्केल)	
समस्या	**तीव्रता (1-5)**
मंदाकिनी नदी प्रदूषण	4.5
अतिक्रमण	4.2
वनक्षेत्र का क्षय	3.8
तीर्थस्थलों का व्यवसायीकरण	4.6
कचरा प्रबंधन की समस्या	4.1

VI.II.II. पर्यावरणीय समस्याएं

सभी स्थानों में वर्तमान में कई पर्यावरणीय समस्याएँ देखने को मिलती हैं, जिनके लिए काफी हद तक मनुष्य ही जिम्मेदार है। इन समस्याओं का असर सीधे लोगों के जीवन पर पड़ता है। प्राथमिक सर्वेक्षण से मिला डाटा ग्राफ स. 2 और सारणी स. 2 में प्रदर्शित किया गया है जिसके आधार पर पता चलता है कि चित्रकूट में मंदाकिनी नदी का प्रदूषण और तीर्थस्थलों का बढ़ता व्यवसायीकरण यहाँ की सबसे बड़ी और ध्यान देने वाली प

पर्यावरणीय समस्याएँ हैं, जिन पर तुरंत काम करने की जरूरत है।

सारणी सं. 2

चित्रकूट के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर आगंतुक (%)	
धार्मिक स्थल	**आगंतुक प्रतिशत (%)**
कामदगिरि परिक्रमा	40%
रामघाट	25%
गुप्त गोदावरी	12%
सती अनुसूया आश्रम	10%
हनुमान धारा	8%
भरतकूप	5%

ग्राफ स. 2

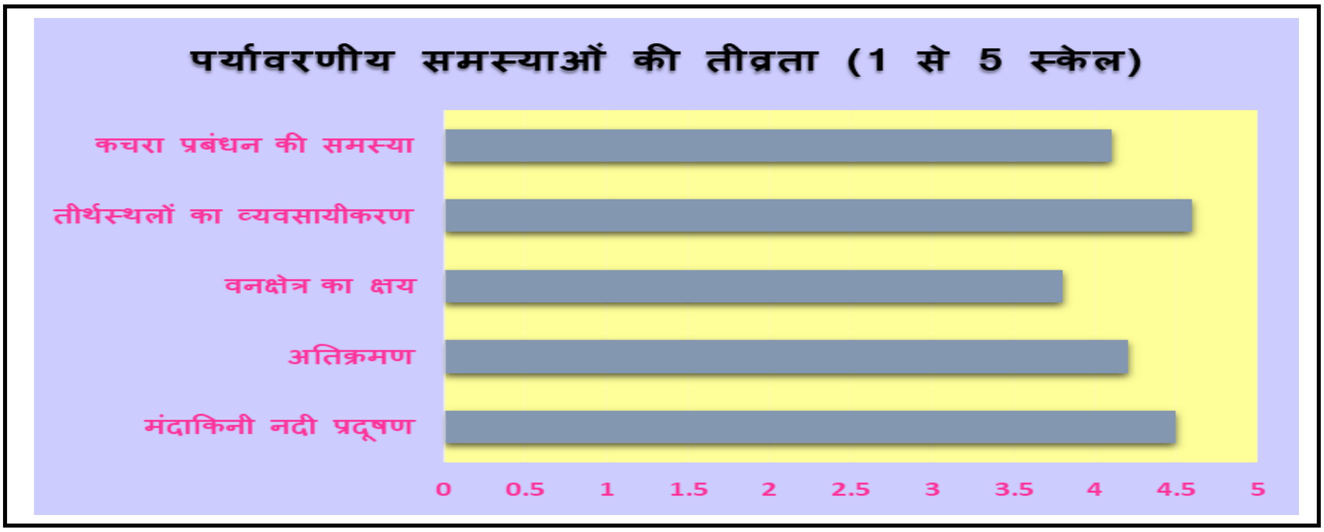

सारणी सं. 3

तीर्थयात्रियों की वार्षिक संख्या	
वर्ष	तीर्थयात्री (लाख में)
2018	7.2
2019	7.8
2020	3.4
2021	5.9
2022	8.5
2023	9.1

VI.II.III. तीर्थयात्री

किसी भी तीर्थस्थल की पहचान और महत्व वहाँ आने वाले तीर्थयात्रियों से ही होती है। तीर्थयात्रियों की संख्या उस स्थान को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरीकों से प्रभावित करती है। सरकारी वेबसाइट से प्राप्त डाटा ग्राफ सं. 3 और सारणी सं. 3 में दर्शाया गया है, जिसमें वर्ष 2018 से 2023 तक की स्थिति दिखाई गई है। इस डाटा के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि समय के साथ चित्रकूट की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है और आने वाले समय में इसके और अधिक बढ़ने की संभावना है।

ग्राफ स. 3

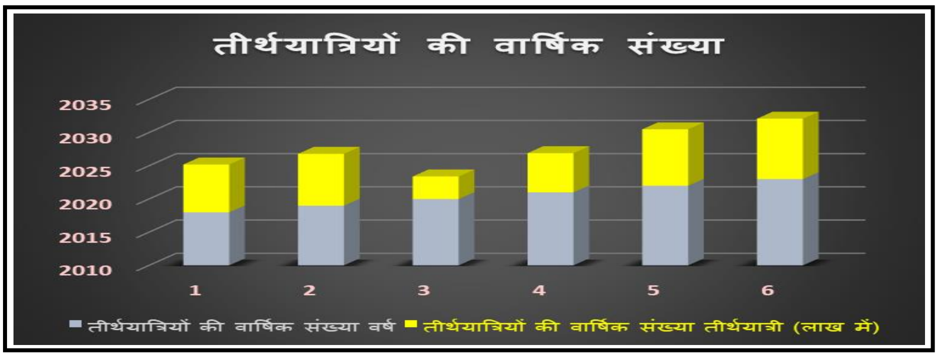

VII. निष्कर्ष एवं चर्चा (Findings & Discussion)

वर्तमान स्थिति: चित्रकूट धार्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र है, जहाँ लाखों श्रद्धालु प्रतिवर्ष आते हैं। किंतु आधुनिक सुविधाओं की कमी है।

7.1.मुख्य चुनौतियाँ

- अवसंरचना की कमी
- स्वच्छता और कचरा प्रबंधन
- अत्यधिक भीड़ और अव्यवस्था
- प्रचार-प्रसार की कमी
- पर्यावरणीय दबाव
- स्थानीय समुदाय की सीमित भागीदारी

संभावनाएँ

- धार्मिक पर्यटन को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान देना।
- सांस्कृतिक एवं ग्रामीण पर्यटन का विकास करना।
- इको-टूरिज्म को बढ़ावा दिया जाएगा।
- स्थानीय रोजगार और आर्थिक वृद्धि मिलना।
- डिजिटल प्रचार-प्रसार से व्यापक लाभ मिलना।

चर्चा

SWOT विश्लेषण से पता चलता है कि चित्रकूट की ताकत धार्मिक महत्व और प्राकृतिक सौंदर्य हैं, कमजोरी अवसंरचना की कमी है, अवसर इको-टूरिज्म और सांस्कृतिक पर्यटन हैं, जबकि खतरे भीड़ प्रबंधन और पर्यावरणीय असंतुलन हैं।

सुझाव (Suggestions)

- चित्रकूट में पर्यटन सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए आधारभूत संरचना का विकास आवश्यक है।
- स्वच्छता बनाए रखना और पर्यावरण संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए जाने चाहिए।
- पर्यटन स्थलों के डिजिटल प्रचार-प्रसार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
- पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए।
- दीर्घकालिक विकास के लिए सतत पर्यटन से जुड़ी रणनीतियाँ अपनाई जानी चाहिए।

VIII. निष्कर्ष (Conclusion)

चित्रकूट धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक दृष्टि से अद्वितीय पर्यटन स्थल है। यह न केवल आस्था का केंद्र है बल्कि स्थानीय विकास का भी साधन है। हालाँकि चुनौतियाँ बड़ी हैं, फिर भी संभावनाएँ अधिक व्यापक और उपयोगी हैं। योजनाबद्ध रणनीति और सतत विकास के माध्यम से चित्रकूट पर्यटन को राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय पहचान दिलाई जा सकती है।

आभार :- मैं इस अवसर पर अपनी मार्गदर्शिका डॉ. अनीता निगम का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने मुझे समय-समय पर अपने सुझाव और निरंतर समर्थन देकर मेरा मार्गदर्शन किया। उनके दिए गए सुझाव और मार्गदर्शन मेरे इस शोध को सफलतापूर्वक पूर्ण करने में अत्यंत सहायक रहे।

साथ ही, मैं उन सभी व्यक्तियों और संस्थानों की आभारी हूँ जिन्होंने मेरे शोध के लिए आवश्यक प्राथमिक (Primary) डेटा उपलब्ध कराने में सहयोग दिया। विशेष रूप से मैं राजकीय जिला पुस्तकालय प्रभारी डॉ. प्रदीप शुक्ला, स्थानीय निवासी, तीर्थयात्री, स्थानीय विद्यालय कर्मचारी व छात्राओं, उत्तरदाता आदि का धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने सर्वेक्षण, साक्षात्कार तथा प्रश्नावली में भाग लेकर मुझे महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

मैं उन स्रोतों का भी आभार प्रकट करती हूँ जिनसे मुझे द्वितीयक (Secondary) डेटा प्राप्त हुआ। इसमें पुस्तकों, शोध-पत्रों, रिपोर्टों, सरकारी दस्तावेजों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों ने मेरे अध्ययन को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अंत में, मैं अपनी माँ सिन्धुजा दीक्षित एवं परिवार के सभी सदस्यों की भावात्मक सहायता, आशीर्वाद और प्रेरणा के लिए भी तहे-दिल से धन्यवाद करती हूँ, जिनके निरंतर समर्थन से मैं अपने जीवन की हर चुनौती को सहजता से पार कर पाई।

संदर्भ (References)

1. Butler, R. W. (1980). The concept of a tourist area cycle of evolution: Implications for management of resources. Canadian Geographer, 24(1), 5–12. https://doi.org/10.1111/j.1541-0064.1980.tb00970.x
2. Chaturvedi, P. (2016). Tourism development in Bundelkhand region: Challenges and opportunities. Journal of Rural Development, 35(2), 145–160.
3. Dubey, M. (2021). Religious tourism in Chitrakoot: An analysis of challenges. International Journal of Tourism Studies, 12(3), 45–60.
4. Government of India. (2022). Ministry of Tourism annual report 2021–22. New Delhi: Ministry of Tourism. https://tourism.gov.in
5. Mishra, R. (2004). Religious tourism in India: Economic and social perspectives. New Delhi: Academic Press.
6. Pandey, S. (2010). Religious significance of Chitrakoot in Indian epic literature. Varanasi: Kashi Publications.
7. Raju, S. (2020). Eco-tourism potential of central Indian rivers and forest regions. Environmental Research Journal, 15(3), 120–135.
8. Sharma, D. (2019). Religious tourism in India: Trends, opportunities and challenges. Journal of Tourism & Heritage Studies, 14(1), 55–72.
9. Singh, A. (2012). Cultural tourism and economic development in India. Journal of Tourism Research, 18(1), 23–35.
10. Singh, P., & Kumar, V. (2018). Sustainable tourism practices in Indian religious destinations. International Journal of Hospitality and Tourism Systems, 11(2), 30–45.
11. Singh, R. (2020). Tourism management issues in Chitrakoot district. Indian Journal of Tourism Studies, 9(4), 67–82.
12. UNWTO. (2019). International tourism highlights: 2019 edition. Madrid: World Tourism Organization. https://www.unwto.org/publications
13. Uttar Pradesh Tourism Department. (2015–2022). Annual tourism reports. Lucknow: Government of Uttar Pradesh.
14. Verma, K. (2017). Tourism development in Bundelkhand: Natural and religious resources. Lucknow: Bundelkhand University Press.
15. Retrived from https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/ on 10/11/2025
16. Retrived from https://www.mapsofindia.com/states/ on 10/11/205